

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत (ICH)

प्रलिम्स के लिये:

[अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत](#), [यूनेस्को](#), प्रदर्शन कला, [कुटियाट्टम](#), रामलीला, रममाण, छऊ नृत्य, [कालबेलिया](#), [मुदयिट्टु](#), संकीर्तन, [नवरोज़](#), [योग](#), कुंभ मेला, [गढ़वाल हिमालय](#), कुट्टमपालम, [रामचरतिमानस](#), [तुलसीदास](#), [मार्शल आर्ट](#), [महायान बौद्ध धर्म](#), [वज्रयान बौद्ध धर्म](#), मुद्रा, वैष्णववाद, दुर्गा पूजा, [गरबा](#)

मेन्स के लिये:

अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत का महत्त्व और इसके संरक्षण की आवश्यकता।

अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत (ICH) क्या है?

[अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत](#) के अंतर्गत वे [प्रथाएँ](#), [अभिव्यक्तियाँ](#), [ज्ञान](#) और [कौशल](#) आते हैं, जिनमें समुदाय, समूह तथा कभी-कभी व्यक्ति अपनी [सांस्कृतिक वरिसत](#) के भाग के रूप में पहचानते हैं।

- इसमें ऐसी वरिसत से जुड़े [उपकरण](#), [वस्तुएँ](#), [कलाकृतियाँ](#) और सांस्कृतिक स्थान भी शामिल हैं।
- ICH यह सुनिश्चित करता है कि सांस्कृतिक वरिसत [समारकों](#) और वस्तुओं के संग्रह पर समाप्त न हो। इसमें [परंपराएँ](#) या [जीवंत अभिव्यक्तियाँ](#) भी शामिल हैं।

वे कौन-से डोमेन हैं जिनमें अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत प्रकट होती है?

- अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत की सुरक्षा के लिये [यूनेस्को](#) के वर्ष 2003 कन्वेंशन के अनुसार, ICH पाँच व्यापक डोमेन में प्रकट होता है:
 - अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत के वाहक के रूप में भाषा सहित [मौखिक परंपराएँ](#) और अभिव्यक्तियाँ।
 - [कला प्रदर्शन](#)
 - [सामाजिक प्रथाएँ](#), रीति-रिवाज़ और उत्सव संबंधी कार्यक्रम
 - प्रकृति और ब्रह्मांड से [संबंधित ज्ञान व अभ्यास](#)
 - पारंपरिक [शिल्प कौशल](#)

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत क्या है?

- ICH ऑफ ह्यूमैनिटी की प्रतनिधि सूची में [गुजरात के गरबा \(2023\)](#) के हालिया शिलालेख के साथ, भारत के पास अब प्रतषिठित यूनेस्को की ICH ऑफ ह्यूमैनिटी की प्रतनिधि सूची में **15 अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत** तत्त्व हैं।
- भारत की अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत की सूची:

क्रम संख्या	अमूर्त सांस्कृतिक वरिसत तत्त्व	शिलालेख का वर्ष
1.	कुटियाट्टम, संस्कृत थियेटर	2008
2.	वैदिक जप की परंपरा	2008
3.	रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन	2008
4.	रममाण, भारत के गढ़वाल हिमालय के धार्मिक उत्सव और परंपरा का मंचन	2009
5.	छऊ नृत्य	2010
6.	राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य	2010
7.	मुदयिट्टु, केरल का अनुष्ठान थियेटर और नृत्य	2010

	नाटक	
8.	लददाख का बौद्ध जप: हमिलयी लददाख कषेत्र, जम्मू और कश्मीर, भारत में पवतिर बौद्ध ग्रंथों का पाठ	2012
9.	मणपुर का संकीरतन, अनुष्ठान गायन, ढोलक बजाना और नृत्य करना	2013
10.	जंडयिला गुरु, पंजाब, भारत के ठठेरों के बीच पारंपरिक तौर पर पीतल और ताँबे के बरतन बनाने का शलिप	2014
11.	नवरोज़	2016
12.	योग	2016
13.	कुंभ मेला	2017
14.	कोलकाता में दुर्गा पूजा	2021
15.	गुजरात का गरबा	2023

■ कुटयिाट्टम (करल):

- कुटयिाट्टम करल के सबसे पुराने पारंपरिक थयिटर में से एक है जो संस्कृत परंपराओं पर आधारति है ।
- इसमें शैलीबद्ध और संहतिाबद्ध रंगमंचीय भाषा में नेत्र अभनिय (आँख की अभवियक्ती) तथा हसूत अभनिय (इशारों की भाषा) प्रमुख हैं । इसमें मुख्य चरतिर के वचिारों और भावनाओं पर ध्यान केंद्रति कयिा जाता है ।
- एक एकल कारय को नषिपादति करने में कई दनि लग सकते हैं और एक पूरण प्रदर्शन 40 दनिों तक चल सकता है ।
- यह पारंपरिक रूप से कुट्टमपालम (Kuttampalams) नामक थयिटरों में प्रदर्शति कयिा जाता है, जो हद्वि मंदरिों में स्थति हैं ।



■ वैदकि जप की परंपरा (भारत):

- वेदों में 3500 वर्ष पहले वकिसति और रचति संस्कृत कवतिा, दारशनकि संवाद, मथिक तथा अनुष्ठान जपों का एक वशिल भंडार शामिल है ।
- वेद वशि्व की सबसे पुरानी जीवति सांस्कृतकि परंपराओं में से एक का प्रतीक है ।
- वैदकि वरिसत में चार वेदों में एकत्रति अनेक पाठ और व्याख्याएँ शामिल हैं, जनिहें आमतौर पर "ज्जान की पुस्तकें" कहा जाता है, भले ही उनहें मौखकि रूप से प्रसारति कयिा गया हो ।
- इस परंपरा का मूल्य न केवल इसके मौखकि साहित्य की समृद्ध सामग्री में नहिति है, बल्कि हज़ारों वर्षों से ग्रंथों को अकषुण्ण बनाए रखने में ब्राह्मण पुजारथिों द्वारा अपनाई गई सरल तकनीकों में भी नहिति है ।
- यद्यपि वेद समकालीन भारतीय जीवन में एक महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिते हैं, एक हज़ार से अधिक वैदकि पाठ शाखाओं में से केवल तेरह ही बची हैं ।



■ रामलीला (उत्तर भारत):

- रामलीला, शाब्दिक रूप से "राम की लीला" दृश्यों की एक शृंखला में रामायण महाकाव्य का प्रदर्शन है जिसमें गीत, कथन, गायन और संवाद शामिल हैं।
- यह राम और रावण के बीच युद्ध की याद दिलाता है तथा इसमें देवताओं, ऋषियों एवं विश्वासपात्रों के बीच संवादों की एक शृंखला शामिल है।
- यह दशहरे के त्योहार के दौरान पूरे उत्तर भारत में आयोजित की जाती है।
- सर्वाधिक प्रचलित रामलीलाएँ अयोध्या, रामनगर और बनारस, वृंदावन, अल्मोड़ा, सतना तथा मधुबनी की हैं।
- रामायण का यह मंचन रामचरतिमानस पर आधारित है जिसकी रचना तुलसीदास ने 16वीं शताब्दी में की थी।



■ रम्माण (उत्तराखंड):

- यह प्रतविरष अप्रैल के अंत में उत्तराखंड के सलूर-डुंगरा के जुड़वाँ गाँवों में मनाया जाता है।
- यह संरक्षक देवता भूमियाल देवता के सम्मान में मनाया जाने वाला एक धार्मिक त्योहार है।
- यह आयोजन अत्यधिक जटिल अनुष्ठानों से बना है। इसमें राम महाकाव्य और विभिन्न कविदंतियों के एक संस्करण का पाठ तथा गीतों एवं मुखौटा नृत्यों का प्रदर्शन शामिल है।

- कषत्रयि जातकि के स्थानीय लोगों का परतनिधित्व करने वाले भंडारी अकेले सबसे पवतिर मुखौटों में से एक, आधे आदमी, आधे शेर हट्टि देवता, नरसमिहा का मुखौटा पहनने के हकदार हैं ।



■ छळ नृत्य (पूरवी भारत):

- छळ नृत्य में महाभारत और रामायण सहति महाकाव्यों के परसंगों, स्थानीय लोककथाओं तथा अमूरत वषियों का अभनिय कयिा जाता है ।
- इसकी तीन अलग-अलग शैलियाँ सरायकेला (झारखंड), पुरलया (पश्चमि बंगाल) और मयूरभंज (ओडिशा) के कषेत्रों से हैं, पहले दो में मुखौटे का उपयोग कयिा जाता है ।
- इसकी उत्पत्तिका पता नृत्य और मार्शल प्रथाओं के स्वदेशी रूपों से लगाया जा सकता है ।
- इसके आंदोलन में नकली युद्ध तकनीकें, पक्षियों और जानवरों की शैलीगत तथा गाँव की गृहणियों के कामकाज पर आधारति गतविधियाँ शामिल हैं ।
- यह नृत्य रात में एक खुली जगह में पारंपरिक और लोक धुनों के साथ कयिा जाता है, जसै रीड पाइप मोहरी तथा शहनाई पर बजाया जाता है ।



■ कालबेलिया लोक गीत और नृत्य (राजस्थान):

- गीत और नृत्य [कालबेलिया](#) समुदाय की पारंपरिक जीवन शैली की अभिव्यक्ति हैं।
- कालबेलिया एक समय पेशेवर साँप संचालक थे। आज वे संगीत और नृत्य में अपने पूर्व व्यवसाय को दोहराते हैं जो नए तथा रचनात्मक तरीकों से विकसित हो रहा है।
- लहराती काली स्कर्ट में महिलाएँ नागनि की हरकतों की नकल करते हुए नृत्य करती हैं और घूमती हैं, जबकि पुरुष खंजरी ताल वाद्य तथा पूंगी पर उनका साथ देते हैं, जो पारंपरिक रूप से साँपों को पकड़ने के लिये बजाया जाने वाला एक लकड़ी का वाद्य यंत्र है।
- नर्तक पारंपरिक टैटू डिजाइन, आभूषण और छोटे दर्पणों तथा चाँदी के धागे से कढ़ाई वाले परिधान पहनते हैं।
- गाने कालबेलिया के काव्य कौशल को भी प्रदर्शित करते हैं, जो प्रदर्शन के दौरान सहज रूप से गीत लिखने और गीतों को सुधारने के लिये जाने जाते हैं।
- पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारित, गीत और नृत्य मौखिक परंपरा का हिससा बनते हैं जिसके लिये कोई पाठ या प्रशिक्षण मैनुअल मौजूद नहीं है।



■ मुडयिट्टु (केरल):

- इसके बजाय शवि ने आदेश दिया कदारिका की मृत्यु देवी काली के द्वारा ही होगी ।
- मुडयिट्टु केरल का एक अनुष्ठानिक नृत्य नाटक है जो देवी काली और राक्षस दारिका के बीच युद्ध की पौराणिक कथा पर आधारित है ।
- मुडयिट्टु कलाकार मंदिर के फर्श पर रंगीन पाउडर से देवी काली की एक विशाल छवि बनाते हैं, जिसे 'कलाम' कहा जाता है, जिसमें देवी की आत्मा का आह्वान किया जाता है ।
- कलाकारों ने नाटक का मंचन किया जिसमें दैव्य ऋषिनारद ने राक्षस दारिका को नरित्तरति करने के लिये शवि को प्रेरित किया, जो नश्वर लोगों द्वारा पराजित होने के प्रतर्पितरिर्षति है ।
- मुडयिट्टु का प्रदर्शन प्रतविरष चलक्कुडी पूजा, [पेरियार](#) और [मूवट्टुपुझा नदियों](#) के किनारे वभिनिन गाँवों में देवी के मंदिरों 'भगवती कावुस' में किया जाता है ।



■ **बौद्ध जप (लद्दाख):**

- लद्दाख क्षेत्र के मठों और गाँवों में, **बौद्ध लामा** (पुजारी) बुद्ध की भावना, **दर्शन एवं शक्तिषाओं** का प्रतिनिधित्व करने वाले पवत्रि ग्रंथों का जाप करते हैं।
- लद्दाख में **बौद्ध धर्म** के दो रूप **महायान व वज्रयान** प्रचलित हैं और इसके चार प्रमुख संप्रदाय हैं, अर्थात् **नगिमा, काग्युद, शाक्य व गेलुक**।
- प्रत्येक **संप्रदाय में जप के कई रूप** होते हैं, जिनका अभ्यास जीवन-चक्र अनुष्ठानों के दौरान तथा बौद्ध और कृषि कैलेंडर के महत्त्वपूर्ण दिनों की अवधि के दौरान किया जाता है।
- भिक्षु **वशिष पोशाक** पहनते हैं तथा दविय बुद्ध का प्रतिनिधित्व करने वाले हाथ के इशारे **मुद्रा** बनाते हैं और **घंटियाँ, ड्रम, झाँझ व तुरही जैसे वाद्ययंत्र जप को संगीतमयता एवं लय प्रदान करते हैं।**
- यह जप समूहों में किया जाता है, या तो **घर के अंदर बैठकर या मठ के प्रांगणों या नजी घरों में नृत्य के साथ।**



■ **संकीर्तन (मणपुरि):**

- **संकीर्तन** में **मणपुरि के मैदानी** इलाकों में नवास करने वाले **वैष्णव लोगों** के जीवन के वभिन्न चरणों और धार्मिक अवसरों को चहिनति करने के लयि कथि जाने वाला अनुष्ठानिक **गायन, ढोलक बजाना और नृत्य** शामिल है ।
- कलाकार गीत और नृत्य के माध्यम से **कृष्ण के जीवन एवं कार्यों का वर्णन करते हैं** ।
- एक वशिष्ट परदर्शन में **दो ढोलक वादक** और लगभग **दस गायक-नर्तक** एक हॉल या घरेलू आँगन में **बैठे भक्तों से घरि हुए** परदर्शन करते हैं ।
- संकीर्तन के दो मुख्य **सामाजिक कार्य** हैं:
 - यह मणपुरि के वैष्णव समुदाय के भीतर एक **एकजुट शक्ति** के रूप में कार्य करते हुए उत्सव के अवसरों पर लोगों को संयुक्त करता है ।
 - यह जीवन-चक्र से संबंधित समारोहों के माध्यम से व्यक्ति और समुदाय के बीच संबंधों को स्थापति एवं सुदृढ करता है ।



■ पारंपरिक तौर पर पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने का शिल्प (पंजाब):

- जंढियाला गुरु के ठठेरों का शिल्प पंजाब में पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक तकनीक का अनुपालन करता है।
- प्रक्रिया ठंडी धातु की टकिया प्राप्त करके शुरू होती है, जिन्हें चपटा करके पतली प्लेट बना दी जाती है। फिर इन प्लेटों को हथौड़े से पीटकर घुमावदार आकार दिया जाता है, जिससे छोटे कटोरे, रमि वाली प्लेट, पानी और दूध के लिए बड़े बर्तन, बड़े खाना पकाने के बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ बनती हैं।
- यह प्रक्रिया कूल मेटल केक प्राप्त करके से शुरू की जाती है, जिन्हें चपटा करके पतली प्लेट बना दी जाती है। फिर इन प्लेटों को हथौड़े से पीटकर घुमावदार आकार दिया जाता है, जिससे छोटे कटोरे, रमि वाली प्लेट, पानी और दूध के लिए बड़े बर्तन, बड़े खाना पकाने के बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ बनती हैं।
- प्लेटों को गर्म करने, हथौड़े से पीटने और उन्हें विभिन्न आकारों में मोड़ने के लिये सावधानीपूर्वकतापमान को नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है, जो ज़मीन में गाड़े गए लकड़ी से चलने वाले छोटे स्टोव (हाथ से पकड़े जाने वाली धौंकनी की सहायता से) का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है।
- बर्तनों को रेत और इमली के रस जैसी पारंपरिक सामग्रियों से पॉलिश करके मैनुअल रूप से तैयार किया जाता है।



■ नवरोज़ (भारत):

- **नवरोज़ पारसियों (ज़ोरोएस्टरनिडिज़्म)** और **मुसलमानों** (शिया व सुन्नी दोनों) के लिये नए वर्ष का जश्न है ।
- यह प्रतविरष **21 मार्च** को अफगानिस्तान, अज़रबैजान, **भारत**, ईरान, इराक, कज़ाखस्तान, करिगज़िस्तान, पाकस्तान, ताजकिस्तान, तुर्की, तुर्कमेनिस्तान और उज़बेकस्तान में मनाया जाता है ।
- इस दौरान अपनाई जाने वाली एक **महत्त्वपूर्ण परंपरा अपने प्रियजनों के साथ विशेष भोजन** का आनंद लेने के लिये **शुद्धता, चमक, आजीविका और धन का प्रतीक वस्तुओं** से सज़ी 'टेबल' के चारों ओर एकत्रित रहता है ।



■ योग (भारत):

- **योग** में आसन, ध्यान, नयित्तरति श्वास, शब्द जप और **अन्य तकनीकों की एक शृंखला शामिल** है जो व्यक्तियों को **आत्म-बोध** करने, किसी भी पीड़ा को कम करने और **मुक्तता की स्थिति** में सहायता करने के लिये अभकिल्पति की गई है ।
- यह अधिक मानसिक, **आध्यात्मिक** और **शारीरिक सुख (Physical Wellbeing)** के लिये मन को शरीर तथा **आत्मा के साथ एकीकृत करने** पर आधारित है ।
- परंपरागत रूप से योग को **गुरु-शषिय मॉडल (गुरु-शषिय)** का उपयोग करके प्रसारित किया गया था, जसिमें योग गुरु संबंधित ज्ञान और कौशल के मुख्य संरक्षक होते थे ।



■ **कुंभ मेला (उत्तर भारत):**

- **कुंभ मेला** पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतपूरण जमावड़ा है, जिसके दौरान यात्री पवतिर नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं।
- यह उत्सव प्रतविर्ष में बारी-बारी से इलाहाबाद, हरदिवार, उज्जैन व नासकि में आयोजति कयिा जाता है और इसमें जाति, पंथ या लगि की परवाह कयि बगैर लाखों लोग भाग लेते हैं।
- भक्तों का मानना है कि **गंगा** में स्नान करने से व्यक्तिपापों से मुक्त हो जाता है और उसे जन्म एवं मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलि जाती है।
- हालाँकि, इसके प्राथमकि वाहक अखाड़ों, आश्रमों अथवा धार्मकि संगठनों से संबंधति हैं जो केवल भक्तिषा पर जीवन यापन करते हैं।



■ दुर्गा पूजा (कोलकाता):

- **दुर्गा पूजा** एक वार्षिक त्योहार है जो हद्वि माँ **देवी दुर्गा** की **दस दविसीय पूजा** का प्रतीक है ।
- देवी की पूजा **महालया (Mahalaya)** के उद्घाटन दविस पर शुरू होती है, जब देवी के मटिटी की मूर्तियों पर **नेत्र चत्रि** किये जाते हैं ।
- यह त्योहार **दसवें दिन समाप्त होता** है, जब मूर्तियों को नदी में वसिर्जति कर दिया जाता है जहाँ से मटिटी आई थी ।
- दुर्गा पूजा की इस पहल के लिये सराहना की जाती है कि इसमें **हाशयि पर मौजूद समूहों और व्यक्तियों** के साथ-साथ **महिलाओं की सुरक्षा** में उनकी भागीदारी शामिल है ।



■ गरबा (गुजरात):

- **गरबा** एक अनुष्ठानिक और भक्तपूरण नृत्य है जो हद्वि त्योहार **नवरात्रि** के अवसर पर किया जाता है, जो '**शक्ति**' की पूजा के लिये समर्पति है ।
- यह नृत्य एक केंद्र में जलाकर रखे गए दीपक या देवी शक्ति की प्रतमाि अथवा मूर्तिके नकिट किया जाता है, जो ब्रह्मांड में नारी शक्तिका प्रतनिधित्व करती है ।



नषिकरषः

भारत में जीवंत और वविधि सांस्कृतिक परंपराओं, पारंपरिक अभवियक्तयिों, अमूरत सांस्कृतिक वरिसत का एक वशिल समूह है जसिके अंतरगत उत्कृष्ट कृतयिों शामिल हैं जनिहें सांस्कृतिक वरिसत के इन रूपाें के अस्तित्व एवं प्रसार के लयि महत्त्वपूर्ण कषेत्रों को संबोधति करने की दृषुटि से संस्थागत समरथन तथा प्रोत्साहन की आवशुकता है । भारत को वभिन्न संस्थानों, समूहों, वयक्तयिों, गैर-सरकारी संगठनों, शोधकरत्ताओं एवं वदिवानों को प्रोत्साहति (Revitalize) करने की आवशुकता है ताकविे भारत की समृद्ध अमूरत सांस्कृतिक वरिसत को मज़बूत करने, संरकषति करने और बढावा देने हेतु गतविविधियों/परयोजनाओं में संलग्न हो सकें ।

UPSC सविलि सेवा परीकषा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न 1. भारत के धारमकि इतहास के संदरभ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयिः (2020)

1. स्थावरिवादी महायान बौद्ध धरम से संबद्ध हैं ।
2. लोकोत्तरवादिन संप्रदाय बौद्ध धरम के महासंघकि संप्रदाय की एक शाखा थी ।
3. महासंघकिों द्वारा बुद्ध के देवत्त्वारोपण से महायान बौद्ध धरम को प्रोत्साहति कयिा ।

उपरयुक्तकथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

प्रश्न 2. मणपिरी संकीरतन के संदरभ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयिः (2017)

1. यह एक गीत और नृत्य प्रदरशन है ।
2. केवल करताल (समिबल) ही वह एक मात्र वादययंत्र है जो इस प्रदरशन में प्रयुक्त होता है ।
3. यह भगवान कृषण के जीवन और लीलाओं को वर्णति करने के लयि कयिा जाता है ।

उपरयुक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) 1, 2 और 3
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3

(d) केवल 1

प्रश्न 3. भारत की संस्कृति एवं परंपरा के संदर्भ में 'कलारीपयट्टु' क्या है? (2014)

- (a) यह शैवमत का एक प्राचीन भक्तपंथ है जो अभी भी दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित है।
(b) यह काँसे और पीतल के काम की एक प्राचीन शैली का है जो अभी भी कोरोमंडल क्षेत्र के दक्षिणी हिस्से में पाई जाती है।
(c) यह नृत्य-नाटिका का एक प्राचीन रूप है और मालाबार के उत्तरी हिस्से में एक जीवंत परंपरा है।
(d) यह एक प्राचीन मार्शल कला और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में एक जीवंत परंपरा है।

?????:

प्रश्न. भारतीय कला वरिषत का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये। (2018)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/intangible-cultural-heritage-ich-of-india>

